ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14 Vol.-5, No.-I, PP-153-157, YEAR JUNE 2016

ग्रामीण समाज में शैक्षिक विकास की सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ

❑ डॉ0 बृजे ा कुमार मिश्रा

वै िक स्तर पर विद्यमान आधारभूत मानवाधिकारों से सम्बन्धित समस्याओं में भौक्षिक अविकास की समस्या सर्वाधिक ज्वलंत एवं ध्यानाकर्षक है क्योंकि ि ाक्षा जहां समाज में समृद्धि और विकास की वाहक है, वहीं समाज के सर्वांगीण विकास की पूर्व आव यकता भी है। ि ाक्षा से तात्पर्य केवल साक्षरता से नहीं है, बल्कि इसमें प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च ि ाक्षा के साथ–साथ कार्यात्मक दक्षता एवं वह सारा ज्ञान जो एक स्वस्थ्य विवेक ाील योग्य नागरिक बनने के लिए आव यक है, की प्राप्ति से समझा जाता है, परन्तु यह अत्यंत सोचनीय है कि 21वीं सदी में इतने आर्थिक एवं वैज्ञानिक विकास के बावजूद भी हम सम्पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाये हैं, सम्पूर्ण भौक्षिक विकास की बात तो दूर है, जिन दे ाों में भौक्षिक अविकास की समस्या अधिक गम्भीर है, वे दे ा अन्य समस्याओं जैसे– गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी आदि से भी ग्रस्त हैं, परन्तु वहीं दूसरी ओर विकसित राष्ट्र जहॉ भौक्षिक विकास की स्थिति अच्छी है, सामाजिक आर्थिक रूप से

भौक्षिक अविकास की समस्या से ग्रस्त दे ाों में भारत अपवाद नहीं है, क्योंकि यहां विद्यमान अनेक समस्याएं जैसे– आधारभूत संरचना के अभाव, सूचना का अभाव एवं विविध सामाजिक सांस्कृतिक पिछड़ापन भौक्षिक विकास को प्रभावित करता है। यही नहीं भारत में भौक्षिक अविकास की समस्या एक वि ाष्ट प्रकार की है, जिसको यहॉ विद्यमान विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों में ही समझा जा सकता है। यहां केरल राज्य का मामल्लपुर जिला न केवल दे ा का पहला पूर्णतः साक्षर जिला है, बल्कि पूर्णतया ई–साक्षर भी है, वहीं उत्तर भारतीय राज्य बिहार, उत्तर प्रदे ा, राजस्थान, झारखण्ड एवं मध्यप्रदे ा आदि के तमाम जिलों की साक्षरता 40 प्रति ात से भी कम है। यद्यपि दे ा में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तथा स्वतंत्रता के प चात भी भौक्षिक विकास के अनेक कार्यक्रम और योजनाएं क्रियान्वित की गयीं, परन्तु कुछ क्षेत्रों, समुदायों को छोड़कर भौक्षिक विकास के कार्यक्रम का प्रभाव बहुत कम लगभग न के बराबर हुआ है, जिसमें ग्रामीण समाज सर्वाधिक समस्याग्रस्त है, क्योंकि वहीं भौक्षिक विकास की समस्या या बाधाएं सर्वाधिक चुनौती उत्पन्न करती हैं। भारतीय समाज जिसकी 72.2 प्रति ात आबादी गांवों में निवास करती है, में अभी भी जटिल सामाजिक– सांस्कृतिक, परम्पराएं एवं रीति–रिवाज अपनी स ाक्त मौजूदगी बनाये हुए हैं, को भौक्षिक विकास का केन्द्र बिन्दु बनाये बगैर भौक्षिक विकास के अन्य लक्ष्य को प्राप्त करना सम्भव नहीं है। ग्रामीण भारत में विभिन्न जातियों, समुदायों एवं वर्गों में भौक्षिक उपलब्धि में एवं भौक्षिक विकास के कार्यक्रमों के प्रभावों में घोर असमानता पायी जाती है, जैसे– उच्च सवर्ण जातियों की तुलना में दलितों में ि ाक्षा की कमी हिन्दुओं की तुलना में मुस्लिमों में, पुरूषों की तुलना में महिलाओं में आदि।अतः भौक्षिक विकास से सम्बन्धित बाधाओं के अध्ययन और वि लेषण में भारतीय समाज के विविध स्थानीय, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों, मानदण्डों एवं उन्मेषों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है, क्योंकि ये स्थानीय सांस्कृतिक–सामाजिक मूल्य, मानदण्ड और उन्मेष समाज में किसी भी परिवर्तन को न केवल प्रभावित करते हैं, बल्कि उसकी द ाा और दि ाा को भी निर्धारित करते हैं इसलिए भारतीय

❑ असि0 प्रोफेसर, जगे वर राय आरती बी0एड0 कालेज, महुआ, वै ाली (बिहार) भारत

ग्रामीण समाज में भौक्षिक अविकास के कारणों को न केवल वृहत सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में वि लेषित किया जा सकता है, बल्कि सूक्ष्म स्तरीय सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यों के स्तर पर भी वि लेषित किया जाना आव यक है।

इस प्रकार, भारतीय समाज में भौक्षिक विकास की बाधाओं को केवल व्यापक धरातल पर अर्थात् संसाधनों की कमी, सामाजिक–आर्थिक असमानता के आधार पर ही वि लेषित नहीं किया जा सकता, बल्कि सूक्ष्म स्तरीय धरातल पर भी विद्यमान सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य, मानदण्ड और उन्मेष भी भौक्षिक विकास को निर्धारित करते हैं, क्योंकि प्रायः ऐसा भी पाया गया है कि संसाधनों एवं आर्थिक द ाओं की अनुकूलता के बावजूद भौक्षिक विकास नहीं हुआ है।

ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता वाले राज्यों के क्रम में ज्यादा से कम की ओर उत्तर प्रदे ा, मध्यम प्रदे ा, उड़ीसा, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड आदि आते हैं। इन राज्यों में औसत 80 प्रति ात जनसंख्या ग्रामीण है। इन 6 राज्यों की सम्मिलित जनसंख्या लगभग 43 करोड़ है, जो भारत की आबादी के लगभग 42 प्रति ात के बराबर है इसके साथ ही इन सभी राज्यों की सामाजिक आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं है जो बीमारू राज्य का समुच्य बनाते हैं। उपर्युक्त राज्यों में अकेले उत्तर प्रदे ा की आबादी 17 करोड़ के लगभग है, जो न केवल भारत के प्रदे ाों में सर्वाधिक है, बल्कि वि व में जनसंख्या के आधार पर 6वें नम्बर पर आता है। जहां की 80 प्रति ात आबादी अभी भी गांवों में निवास करती है। जहां भारतीय समाज की विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता दृष्टव्य है। इसके साथ–साथ उ0प्र0 में अनुसूचित जाति, एवं अन्य पिछड़ी जाति तथा मुस्लिम समुदाय के लोगों की सर्वाधिक संख्या पायी जाती है, जिनमें भौक्षिक विकास की स्थिति काफी दयनीय है। उत्तर प्रदे ा के अधिकां ा जिलों में ग्रामीण जनसंख्या 70 प्रति ात या इससे अधिक पायी जाती है और इस ग्रामीण समाज में परम्परागत भारतीय समाज के सम्पूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य, मानदण्ड एवं उन्मेष पाये जाते हैं। जिससे उनकी ि ाक्षा के सन्दर्भ में भी अपनी एक वि ि ाष्ट सोच पायी जाती है, जैसे– पूर्वी उत्तर प्रदे ा की पिछड़ी जातियां जैसे– यादव, कुर्मी की अपेक्षा प ि चमी उ0प्र0 के जाटों में ि ाक्षा प्राप्ति सम्बन्धी सोच में अन्तर पाया जाता है। इसी प्रकार अनुसूचित जातियों में भी भौक्षिक विकास की सोच में काफी अन्तर पाया जाता है जैसे– उत्तरांचल, उत्तर प्रदे ा की जनजातियों की सोच में काफी अन्तर पाया जाता है। इसके अलावा उच्च सवर्ण जातियों में भी क्षत्रियों और ब्राम्हणों तथा अन्य जातियों में भौक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में सोच का अन्तर देखा जा सकता है।

शोध प्रारूपः प्रस्तुत भाोध पत्र की प्रस्थापना के परीक्षण हेतु उत्तर प्रदेश के औरैया जनपद, जो प्राचीन में इटावा जनपद का भाग था, की वर्तमान तहसील विधूना के दो गांवों 1. धुपकरी, जो जनपद मुख्यालय से 19 किमी0 दूर दक्षिण में स्थित है, 2. परसू, जो मुख्यालय से 17 किमी0 दूरी पर स्थित है, का चुनाव किया गया जहां सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना और संगठन लगभग समान है,जो परम्परागत भारतीय ग्रामीण समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक वि ोषताओं को धारण करता है। दोनों गांवों से अलग–अलग चार स्तरों से पन्द्रह–पन्द्रह परिवारों काचयन स्तरीयकृत दैव–निद ान के आधार पर किया गया, जिनमें सवर्ण जाति, अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ी जाति और मुस्लिम समुदाय को आधार बनाया गया। तत्प चात् चयन किये गये परिवारों से साक्षात्कार, अवलोकन और बातचीत के आधार पर आंकड़ों का संकलन किया गया तथा द्वितीय स्रोतों से भी आंकड़ों का संकलन किया गया।

तालिका सं0– 01

दोनों ग्रामों की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना एवं संगठन

	धुपकरी	परसू
सवर्ण जाति	415	356
क. क्षत्रिय परिवार	312	181
ख. ब्राम्हण	46	91
ग. वै य एवं अन्य जाति के परिवार	57	84
अनुसूचित जाति के परिवार	137	122
पिछड़ी जाति के परिवार	74	149
अल्पसंख्यक मुस्लिम परिवार	140	123
कुल परिवारों की संख्या	766	750
ि ाक्षण संस्थायें		
1. प्राथमिक विद्यालय सरकारी	02	02
2. कन्या पाठ ाला	01	01
3. मान्टेसरी स्कूल	02	01
4. मान्टेसरी जूनियर	02	01
5. मदरसा	01	01
6. इण्टर कालेज	01	01
साक्षरता प्रति ात		
कुल साक्षरता	66 प्रति त	66 प्रति ात
पुरूश	82 प्रति ात	75 प्रति ात
महिला	50 प्रति ात	45 प्रति ात
सवर्ण	95.50 प्रति ात	90 प्रति ात
अनु0जाति	41.50 प्रति ात	40 प्रति ात
पिछड़ी जाति	84.50 प्रति ात	75 प्रति ात
मुस्लिम	42.50 प्रति ात	35 प्रति ात

1. परसू गांव में सवर्ण जाति के पुरूषों तथा पिछड़ी जाति में भी लगभग 40 प्रति ात लोग इण्टर की ि ाक्षा प्राप्त हैं तथा पूरे ग्राम से सात परिवारों से उनके बच्चे बाहर के कालेजों एवं वि वविद्यालयों में उच्च ि ाक्षा ग्रहण कर रहे हैं। वहीं धुपकरी गांव में 60 प्रति ात लोग इण्टर तक की ि ाक्षा प्राप्त हैं एवं इस गांव से लगभग 20 परिवारों के बच्चे कालेजों एवं वि वविद्यालय में उच्च ि ाक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

2. परसू गांव में अनुसूचित जाति के केवल 5 प्रति ात लोग ही इण्टर तक की ि ाक्षा प्राप्त कर पाये हैं, जबकि धुपकरी गांव में लगभग 10 प्रति ात लोग इण्टर तक की ि ाक्षा प्राप्त किये हुए हैं।

3. परसू गांव की तुलना में धुपकरी गांव में महिला साक्षरता का प्रति ात अधिक है। यह साक्षरता का यह अन्तर दोनों गांवों के मुस्लिम महिला साक्षरता में देखा जा सकता है। धुपकरी गांव में मुस्लिम

समुदाय के केवल 5–6 पुरूष ही इण्टर तक की ि ाक्षा प्राप्त किये हैं।

ग्रामीण समाज में विद्यमान विभिन्न जातिगत धार्मिक और स्थानीय सूक्ष्म स्तरीय सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य मानदण्ड उन्मेष लोगों की भौक्षिक उन्मुखता में भी अन्तर को प्रद ि ात करते हैं। सवर्ण उच्च जातियों में प्रस्थिति और प्रतिष्ठा का प्रतीक भौक्षिक उपलब्धि, भूमि, सम्पत्ति, सांस्कृतिक–उच्चता, राजनैतिक मूल्यों की ओर उन्मुखता तथा बाहुबल को ही माना जाता है और इन सबकी प्राप्ति के लिए ि ाक्षा कोई अति आव यक माध्यम नहीं हो पायी है। जिस दे ा एवं समाज में गांव के प्रधान से लेकर मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री तक के पद की प्राप्ति एक अनपढ़ अ ि ाक्षित व्यक्ति कर सकता है वहां ि ाक्षा को प्राथमिकता कैसे मिल सकती है?दूसरा, ि ाक्षा को ग्रामीण लोग नौकरी तथा पैसा प्रदान करने वाली वस्तु के रूप में मानते हैं और चूंकि भारत में ि ाक्षा–व्यवस्था रोजगारोन्मुख कम है या नहीं इसलिए लोग ि ाक्षा को अनुपयोगी एवं म ह त्व ह ी न म ा न त े ह ैं ।

ग्रामीण समाज में निम्न एवं सुविधा वंचित जाति के लोगों की सोच है कि ि ाक्षा केवल उच्च जातियों के लिए है, उनके लिए नहीं, तथा उनकी पहुंच से दूर है, उनमें भौक्षिक उपलब्धि की प्रेरणा को उत्पन्न नहीं करती है। अनुसूचित जातियों में बाल विवाह का प्रचलन अधिक है, क्योंकि उनमें यह मान्यता है कि अगर विवाह जल्दी नहीं हुआ तो जीवन भर नहीं हो पायेगा। इस जाति समुदाय में भी ि ाक्षा का विवाह से सम्बन्ध है तथा यह सोच कि जब उच्च जातियों के लोग ही ि ाक्षा से अधिक लाभान्वित नहीं हो पाते हैं तो वे कैसे हो पायेंगे, उनमें भी ि ाक्षा के प्रति एक नकारात्मक प्रेरणा उत्पन्न करती है। ग्रामीण समाज में अन्य पिछड़ी जातियों में दूसरी जातियों की तुलना में ि ाक्षा के बारे में सकारात्मक सोच पायी जाती है, क्योंकि पिछड़ी जातियों में ज्यादातर जातियां, व्यवसायी और पे ोवाली हैं, जिससे उनमें प्राथमिक ि ाक्षा प्राप्त करने की सोच प्रबल होती है, लेकिन पैतृक व्यवसाय में संलग्नता से बच्चों की आगे की ि ाक्षा बाधित हो जाती है, परन्तु अब पिछड़ी जातियों में थोड़ी जागरूकता आयी है, जिसके प्रभाव स्वरूप भौक्षिक उन्मुखता का विकास हो रहा है।

मुस्लिम समुदाय में विद्यमान बहुसंख्यक समुदाय का भय तथा अपने को अल्पसंख्यक और वंचित मानने वाली सोच उनकी धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों एवं रूढ़ियों को पुनरूत्पादित तो करते ही हैं साथ ही साथ और स ाक्त भी करते हैं, जिस कारण से इस समुदाय के लोग किसी भी परिवर्तन और विकास को अपेक्षाकृत कम स्वीकार करते हैं। इसलिए वे केवल उर्दू, अरबी भाशा की तथा धार्मिक ि ाक्षा को ही महत्व देते हैं। फलस्वरूप मुख्यधारा की आधुनिक ि ाक्षा हतोत्साहित होती है। मुस्लिम समुदाय में पर्दा प्रथा तथा अन्य परम्परागत धार्मिक–सांस्कृतिक सीमितता के कारण ि ाक्षा की उपलब्धता महिलाओं में बिल्कुल हतोत्साहित होती है। इस प्रकार मुस्लिम समुदाय में महिला ि ाक्षा की समस्या अत्यधिक दयनीय है।

तालिका सं0– 02

ग्रामीण समाज में विभिन्न जातियों समुदायों के मूल्य, मानदण्ड और उन्मेष

सवर्ण उच्च श्रेणी	अत्यधिक सम्पन्न–उपलब्धि की अपेक्षा प्रदत्ता की आकांक्षा ि ाक्षा को एक द्वितीयक एवं भाोभा की वस्तु मानना।
सवर्ण मध्यम श्रेणी	सम्पन्न थोड़ा बहुत आकांक्षा, ि ाक्षा आराम और भविश्य की सुरक्षा के लिए।
अन्य पिछड़ी जाति	सामान्य रूप से सम्पन्न–कुछ अधिक आकांक्षा ि ाक्षा को महत्व।
अनुसूचित जाति या निम्न	असम्पन्न सापेक्षिक वंचना की सोच एवं ि ाक्षा एक श्रेणी व्यर्थता, महत्वहीन स्थिति।

इस प्रकार ग्रामीण समाज में भौक्षिक विकास की बाधाओं के सम्बन्ध में जो समाज ाास्त्रीय विचार या संकल्पनाएं विद्यमान हैं, उनमें अधिकतर भौक्षिक अविकास का कारण आर्थिक, सामाजिक असमानता और संसाधनों की असमान उपलब्धता को मानती हैं। इसी कड़ी में जीन ड्रीज ने भी अपने समकालीन भाोध पत्र ''साक्षरता और उसके सामाजिक संदर्भ'' में भी वृहत सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों को भौक्षिक विकास के निर्धारक के रूप में माना है, परन्तु भारतीय ग्रामीण समाज में विद्यमान स्थानीय सूक्ष्म स्तरीय सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य मानदण्ड और उन्मेश समाज में भौक्षिक विकास की द ाा और दि ाा को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित और निर्धारित करते हैं।जीन ड्रीज ने हिमाचल प्रदे ा में साक्षरता दर में सकारात्मक और तीव्र वृद्धि का कारण वहां के सामाजिक, आर्थिक समानता को दिखलाया है, परन्तु यह तथ्य गौर करने लायक है कि ग्रामीण समाज में आधुनिकीकरण, नगरीकरण और संस्कृतिकरण के प्रभाव से सामाजिक–आर्थिक संरचना में कुछ परिवर्तन तो आया है, परन्तु वैचारिक सांस्कृतिक मूल्य, मानदण्ड और नैतिकता में परिवर्तन नहीं हुआ है। यद्यपि जीन ड्रीज अपने लेख में यह स्वीकार करते हैं कि समाज में भौक्षिक विकास का निर्धारक कोई ए तत्व या अवयव नहीं हो सकता बल्कि अनेक कारकों के अन्तर्सम्बन्ध के समुच्य को माना जा सकता है। अतः केवल सामाजिक, आर्थिक सम्पन्नता औ रसामाजिक समानता ही न केवल भौक्षिक विकास की दि ाा को निर्धारित करते हैं बल्कि विद्यमान सामाजिक–सांस्कृतिक सूक्ष्म स्तरीय स्थानीय मूल्य, मानदण्ड और उन्मेष भी निर्धारित करते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत भाोध पत्र जीन ड्रीज की कड़ी में उन सामाजिक, सांस्कृतिक अवयवों को खोजने का एक प्रयास है, जो भारतीय ग्रामीण समाज में भौक्षिक विकास एवं प्रसार में एक बाधा उत्पन्न करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, जी0सी0, 'एजुके ान फॉर आल' रिसर्च आर्टिकल, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 2008 पृ0 1–2।
2. एन0ई0पी0, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1986।
3. सिंह, रंगनाथन एवं सेठी 'एजुके ानल रिफार्म्स एण्ड डेवलपमेन्ट स्ट्रेटजीज', पृ0 247।
4. गांधी, एम0के0, 'बेसिक एजुके ान', नवजीवन पब्लि0 हाउस, अहमदाबाद, पृ0 68।
5. ताराचन्द ''डेवलमेन्ट ऑफ एजुके ानल सिस्टम इन इंडिया'', 2002 पृ0 133।

*****